

(ग) लेखिका के कमरे में किसकी गंध हौले-हौले आने लगी ?

(i) सोनजुही (ii) बसंत (iii) नीम-चमेली (iv) गुलाब

(घ) गिल्लू का कौन-सा खाद्य प्रिय खाद्य था ?

(i) चावल (ii) बिस्कुट (iii) केला (iv) काजू

(ङ) गिलहरियों के जीवन की अवधि कितने वर्ष से अधिक नहीं होती ?

(i) एक (ii) दो (iii) तीन (iv) चार

### भाषा-ज्ञान

1. प्रस्तुत पाठ में आये हुए निम्नलिखित शब्दों पर ध्यान दीजिए :

स्वर्णिम, समादरित, अपनापन, लगाव, परिचारक, झूला ।

– ये शब्द कुछ प्रत्ययों के मेल से बने हैं जो इस प्रकार हैं–

स्वर्णिम = स्वर्ण + इम

समादरित = समादर + इत

अपनापन = अपना + पन

लगाव = लगना + आव

परिचारिक = परिचार + इक

झूला = झूलना + आ

इन शब्दों के अंत में लगनेवाले शब्दांश प्रत्यय हैं । जो शब्दांश धातु, क्रिया या शब्दों के अंत में लग कर नये शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं । प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं – कृत् प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय । धातु या क्रिया के अंत में लगनेवाले प्रत्यय कृत् प्रत्यय कहे जाते हैं और उनके मेल से बने शब्द को कृदन्त पद कहा जाता है । संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के बाद लगनेवाले प्रत्यय को तद्धित प्रत्यय और इनके मेल से बने शब्द को तद्धितान्त पद कहा जाता है ।

2. पाठ में आये इन शब्दों पर ध्यान दीजिए :

– नीम-चमेली, दोपहर, जीवन-यात्रा, मरणासन्न ।

– इन शब्दों को समास कहा जाता है । परस्पर संबंध रखनेवाले दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहा जाता है ।

जैसे – नीम और चमेली = नीम-चमेली

दो पहरों का समूह = दोपहर

जीवन की यात्रा = जीवन-यात्रा

मरण को आसन्न (पहुँचा हुआ) = मरणासन्न

–ये शब्द क्रमशः द्वन्द्व समास, द्विगु समास एवं संबंध तत्पुरुष तथा कर्म तत्पुरुष समास के उदाहरण हैं ।

3. किसी भी प्राणी, पदार्थ, स्थान, गुण आदि का बोध करानेवाले शब्द को संज्ञा कहा जाता है । इसके पांच भेद हैं :

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा

(ख) जातिवाचक संज्ञा

(ग) भाववाचक संज्ञा

(घ) समुदायवाचक संज्ञा

(ङ) द्रव्यवाचक संज्ञा

निम्न पंक्तियों में रेखांकित किये गये संज्ञा-शब्दों का भेद बताइए :

(क) सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गयी है ।

(ख) गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती ।

(ग) उनका मुझसे लगाव भी कम नहीं है ।

(घ) नीम-चमेली की गंध मेरे कमरे में आने लगी ।

(ङ) दिनोंदिन सोने का भाव बढ़ता जा रहा है ।

(च) गिल्लू गिलहरियों के झुंड का नेता था ।

4. कोष्ठक में दिये गये शब्दों की भाववाचक संखाएँ बनाकर रिक्त स्थान भरिए :

(क) कभी किसी की \_\_\_\_\_ नहीं करनी चाहिए । (बुरा)

(ख) परिश्रम करने पर \_\_\_\_\_ मिलती है । (सफल)

(ग) बुजुर्ग की \_\_\_\_\_ से हम मुग्ध हो गये । (सज्जन)

(घ) प्रत्येक मनुष्य को अपने \_\_\_\_\_ का ध्यान रखना चाहिए । (स्वस्थ)

5. विशेषण के साथ सही संज्ञा शब्द को मिलाइए :

पीली – प्रियजन	नीले – कली	सघन – आँखें
झब्बेदार – बत्ती	दूरस्थ – हरीतिमा	चमकीली – रोएँ
स्निग्ध – पूँछ	मधु – स्वर	पतली – काँच
		कर्कश – सन्देश

6. निम्नलिखित शब्दों का विलोम / विपरीत शब्द लिखिए :

जीवन	_____	प्रभात	_____
विश्वास	_____	सन्तोष	_____
आवश्यक	_____	अपनापन	_____

7. निम्नलिखित वाक्यों में उचित परसर्ग शब्द भरिए :

(i) वह मेरे पैर तक आकर परदे \_\_\_\_\_ चढ़ जाता ।

(ii) सारा लघुगात लिफाफे \_\_\_\_\_ बन्द रहता ।

(iii) इस मार्ग \_\_\_\_\_ गिल्लू ने मुक्ति की सांस ली ।

(iv) नीम - चमेली की गंध मेरे कमरे \_\_\_\_\_ आने लगी ।

(v) फिर गिल्लू \_\_\_\_\_ जीवन का प्रथम बसंत आया ।

**8. उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित वाक्यों को कर्मवाच्य में बदल कर लिखिए :**

उदाहरण : महादेवी ने गिल्लू के घावों पर पेंसिलिन का मरहम लगाया ।

कर्मवाच्य में – महादेवी के द्वारा गिल्लू के घावों पर पेंसिलिन का मरहम लगाया गया ।

(क) उसने एक अच्छा उपाय खोज निकाला । .....

(ख) मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया । .....

(ग) महादेवी ने उसे तार से खिड़की पर लटका दिया । .....

(घ) हम उसे गिल्लू कहकर बुलाने लगे । .....

(ङ) गिल्लू ने मुक्ति की साँस ली । .....

**9. वचन बदलिए :**

कली \_\_\_\_\_

आँख \_\_\_\_\_

कौवा \_\_\_\_\_

गिलहरी \_\_\_\_\_

पक्षी \_\_\_\_\_

झूला \_\_\_\_\_

गमला \_\_\_\_\_

हंस \_\_\_\_\_

**10. लिंग स्पष्ट कीजिए :**

भूख \_\_\_\_\_

पानी \_\_\_\_\_

गंध \_\_\_\_\_

झुण्ड \_\_\_\_\_

दौड़ \_\_\_\_\_

जीवन \_\_\_\_\_

पूँछ \_\_\_\_\_

पीढ़ी \_\_\_\_\_

11. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची रूप लिखिए :

दीवार \_\_\_\_\_

जीवन \_\_\_\_\_

पुरखे \_\_\_\_\_

प्रयत्न \_\_\_\_\_

आँख \_\_\_\_\_

आवश्यक \_\_\_\_\_

प्रभात \_\_\_\_\_

घर \_\_\_\_\_

अभ्यास - कार्य

1. निम्नलिखित शब्दों को पाँच-पाँच बार लिखिए :

स्वर्णिम \_\_\_\_\_

निश्चेष्ट \_\_\_\_\_

स्निग्ध \_\_\_\_\_

हरीतिमा \_\_\_\_\_

आश्वस्त \_\_\_\_\_

2. क्रिया-शब्द से प्रत्यय - ना हटानेसे क्रियार्थक संज्ञा-शब्द बनता है ।

जैसे :- दौड़ना – दौड़

उछलना-कूदना – उछल-कूद

सोचना – सोच

पकड़ना – पकड़

पहुँचना – पहुँच

माँगना – माँग

**3. हिन्दी में अनुस्वार और चन्द्रविन्दु के प्रयोग तथा उच्चारण पर ध्यान दीजिए :**

हंस – अनुस्वार, व्यंजन का उच्चारण

साँस – चन्द्रविन्दु, अनुनासिक स्वर का उच्चारण

निम्नलिखित शब्दों का सही उच्चारण कीजिए :

अनुस्वार – संधि, चोंच, पंजा, बसंत, झुंड, घोंसला, ठंडक, अंत ।

अनुनासिक स्वर – काँव – काँव, पहुँचना, बूँद, मुँह, उँगली, काँच, झाँकना, आँगन ।

**4. अर्थ देखिए और समझिए :**

के निकट – के पास, के समीप

के बहाने – के कारण

के अतिरिक्त – के बिना

इस तरह के शब्द प्रस्तुत पाठ से छाँटिए ।



## जननी जन्मभूमि



संकलित

विचार-बोध :

यह निबंध हमारी जन्मभूमि ओड़िशा (उत्कल, कलिंग, कोशल आदि) के बारे में काफी जानकारी देता है। कलिंग के लोग बड़े बीर और साहसी होते थे। कलिंग की सेना ने सम्राट अशोक की सेना के साथ मुकाबला किया। बहुत लोग मारे गए। मध्यकाल में ओड़िशा के गजपति राजाओं ने गंगा से गोदावरी तक अपना राज्य फैलाया था। आज वह गौरव अतीत में डूब गया है। उत्कल भूमि मंदिर मूर्तियाँ बनाने की कला में मशहूर थी। यहाँ की चित्रकला तथा अन्य शिल्प कला देश-विदेश में प्रख्यात थी।

आड़िशा का वर्तमान फिरसे उत्साहजनक हुआ। स्वतंत्रता के बाद यहाँ अनेक छोटे बड़े उद्योग तथा कारखाने स्थापित हुए। कई बंदरगाहों की स्थापना हुई है। यह प्रांत आज प्रगति के पथ पर चल रहा है।

## जननी जन्मभूमि

यह दुनिया बड़ी अजीब है। क्या-क्या नहीं है इसमें। बड़े-बड़े पहाड़ हैं। घने जंगल हैं। कलकल करती नदियाँ बहती हैं। झरने झरते हैं। सागर गरजते हैं। किस्म-किस्म के पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, नर-नारी हैं। भला है तो बुरा भी है। तुलसीदास कहते हैं – ‘जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार।’ यहाँ जड़-चेतन, चर-अचर सब हैं। यह विविधता का भंडार है। अच्छे लोग अच्छाई को चुनते हैं, जैसे हंस दूध पी लेता है, और पानी छोड़ देता है।

संसार हर पल बदलता भी रहता है । ऋतुएँ बदलती हैं । मौसम कभी सुहावना होता है तो कभी डरावना । कभी जानलेवा गर्मी तो कभी कड़ाके की सर्दी । जहाँ हरीभरी फसल नाचती है, वहाँ अकाल भी पड़ता है । आदमी कभी सुख-चैन से जीता है तो कभी दुःखी होता है । कहीं अमीरी है तो कहीं गरीबी । अच्छे दिन जल्दी उड़ जाते हैं । बुरे दिन हौले-हौले सरकते हैं । लोग कहते हैं यह जिंदगी भी क्या है ? चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात ।

यह मनुष्य भी अजीब प्राणी है । वह अँधेरी रात से डरता नहीं, लड़ता है । वह हर दुःख को झेलता है, हर दर्द को सहता है । चार दिन की चाँदनी की तलाश में उन चंद दिनों के सुख के लिए, प्रकृति से भी लड़ता है । उस पर कब्जा जमाना चाहता है । क्योंकि आशा से ही आकाश थमा है । मनुष्य की यह अदम्य जिज्ञासा नया-नया इतिहास रचती है । यह उसके उत्थान और पतन की कहानी है ।

इसलिए हर आदमी का हर समाज का, हर देश या प्रदेश का अलग इतिहास होता है । उसमें उसकी आशा-आकांक्षा, खुशी-गम का, सफलता-विफलता का, आलस्य और चौकसी का लेखाजोखा रहता है ? आइए, अपनी जन्मभूमि ओड़िशा के इतिहास के एक-दो पन्ने पढ़ें ।

ओड़ देश या ओड़िशा के कई नाम मिलते हैं । कलिंग, उत्कल, कंगोद और कोशल । एक-एक नाम शायद किसी अंचल या काल में ज्यादा प्रिय हुए हैं ।

इस इतिहास का पहला पन्ना है ईस्वी पूर्व तीसरी शताब्दी का । लिखा है – कलिंगाः साहसिकाः । क्योंकि कलिंग के सैनिकों ने विशाल मगध-सेना के दाँत खट्टे कर दिए । सम्राट अशोक का डटकर मुकाबला किया । जानें दीं, जमीन नहीं दी । लाख की तादाद में मरे, लाख बन्दी बने । दया नामकी नदी में रक्त की धारा बह चली । न राजा का नाम पता है, न सेनापति का । लेकिन प्रचण्ड अशोक भी घबरा गया । वह धर्माशोक बन गया । युद्ध छोड़ दिया । तलवार फेंक दी । मानव-प्रेम और अहिंसा की नीति अपनाई । धौली के अशोकीय



शिलालेख उसका बयान करते हैं। पहाड़ी पर जापानियों के हाथों बना नया बौद्धस्तूप उस गौरवशाली घटना की उद्घोषणा करता है। वीरत्व की यह कहानी आगे बढ़ती है। कलिंग सम्राट खारबेल मगध पर आक्रमण कर देते हैं। उसे पराजित करके 'कलिंग जिन' को वापस ले आते हैं। खण्डगिरि - उदयगिरि के शिलालेख और गुफाएँ खारबेल का यशोगान करती हैं। कलिंग के शौर्य की यह अमर कथा है।

साहसिकता का यह सिलसिला आधुनिक युग में फिर दिखाई देता है। बक्सि जगबन्धु, सुरेन्द्र साय, चाखि खुण्टिया, चक्रधर बिसोई, लक्ष्मण नायक जैसे साहसी कलिंग के सपूतों ने अंग्रेजों को भी चैन की सांस नहीं लेने दिया था। इन लोगों ने प्राण दे दिये, मगर अन्याय नहीं सहा।

इतिहास का अब दूसरा पन्ना देखें। उत्कृष्ट कलाओं का देश उत्कल। सदियाँ बीत गईं। मगर भुवनेश्वर, पुरी और कोणार्क के बड़े-बड़े मंदिर आज भी सिर उठाये खड़े हैं। दुनिया के ये अजूबे हैं। भव्य और विशाल स्थापत्य अनेक छोटे-बड़े मंदिर ! हजारों नारी मूर्तियाँ। विभिन्न चेष्टाओं और भंगिमाओं से मुग्ध करनेवाली। हाथी, घोड़े, पहिये, कमल, रथाकार मंदिर ! विशाल और मनोहर ! नृत्य-गान के माहौल ! द्वारपाल, दिक्पालों के पौरुष। ये सब देशी-विदेशी पर्यटकों के लिए जादू के नमूने हैं। ओड़िशा के सूती और पाट के वस्त्र, सोने-चाँदी के गहने, काँसे-पीतल के बर्तन, सींग की कलाकृतियाँ विदेशी बाजार के आकर्षण रही हैं। ओड़िशी चित्रकला, नृत्य और संगीत आज विदेशों में अत्यंत लोकप्रिय हैं। ओड़िआ साधव (बनिये) छोटे-बड़े नावों में सुदूर पूर्वी द्वीपों में व्यापार का जाल फैलाये हुए थे। महासमुद्र की तरंगमालाओं में नाच-नाच कर जाते और धनरत्नों से नौकाएँ भर भर कर घर लौटते थे। न तूफान से डरते थे न गहरे सागर से। वे कहते थे - 'आ का मा भै' ! हमें किसीका डर नहीं। चिलिका झील तो उत्कल-लक्ष्मी की विलास सरोवर रही। लेकिन दीपक जलता है तो बुझता भी है। ओड़िशा के ऐसे, शैर्य, ऐश्वर्य, और वैभव सब

काल के गर्भ में विलीन हो गए । ओड़िशा का सारा कार्यकलाप इतिहास बन गया । उसका पतन हो गया ।

बीसवीं शती के आरंभ में महापुरुष मधुसूदन ने इस इतिहास को पढ़ा । उनका दिल भर आया । उन्होंने सोते को जगाया । बोले – ‘है उत्कल के सपूतो ! उठो, जागो ! अपने पुराने गौरव को याद करो ! तुम्हारे पूर्वजों ने गांगा से गोदावरी तक अपना राज्य फैलाया था । वह टूट-बिखर गया । “गजपति गौड़ेश्वर नव कोटि कर्णाट कलवर्गेश्वर” की उपाधि झूठी हो गई । तुम दाने दाने के मोहताज हो गए । अब तो उठो ! करो या मरो ।’

ओड़िशावासियों ने यह पुकार सुनी । अप्रैल १९३६ को स्वतंत्र ओड़िशा प्रदेश बना । अनेक सुधी नेता काम में जुट गए । नवनिर्माण का बीड़ा उठाया । उत्कल विश्वविद्यालय स्थापित हुआ । अनेक स्कूल-कॉलेज खुले । नई और तकनीकी शिक्षा का इंतजाम हुआ । इंजीनियरिंग और मेडिकल कॉलेज खुले । कुछ ही वर्षों में हजारों अमले-ऑफिसर, शिक्षक-अध्यापक, इंजीनियर और डॉक्टर तैयार हो गए । इन योग्य व्यक्तियों ने अपने तथा बाहर के प्रांतों में काम करके नाम कमाया । हीराकुद बाँध बना । खेतों की सिंचाई हुई । अनाज का पैदावार बढ़ा । राउरकेला से लोहे का उत्पादन होने लगा । सुनाबेड़ा में हवाई जहाज बनने लगे । पराद्वीप बंदरगाह ने नौवाणिज्य को बढ़ावा दिया । इमफा, नालको, जिन्दल और वेदान्त जैसे बड़ी-बड़ी कंपनियों ने धातु-द्रव्यों का उत्पादन किया । चाँदीपुर और बडमाल में देश के लिए आधुनिक रक्षा-सामग्री बनने लगी । आजकाल तो ओड़िशा में ही सारी आधुनिक सुविधाएँ मिलने लगी हैं ।

सदियों बाद फिर ओड़िशा की किस्मत पलटी है । वह प्रगति के रास्ते पर आया है । दूसरे राज्यों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहा है । देश की प्रगति में भी उसका योगदान बढ़ा है । यह उसके उत्थान के लक्षण हैं । हम सबको इससे लाभ उठाना चाहिए । नये उद्यमों में भागेदारी होनी चाहिए । तब ओड़िशा का नया इतिहास बन सकेगा ।



## शब्दार्थ :

निराला – विचित्र, स्थावर – स्थिर रहनेवाले, जंगम – चलने-फिरनेवाले, जड़ – लकड़ी पत्थर जैसी वस्तुएँ, चेतन – जीव, सुहावना – सुखकर, फकीरी – गरीबी, खुशहाली – सुख का वक्त, बदहाली – बुरा समय, गम – दुःख, पन्ना – पृष्ठ, सिलसिला – कड़ी, अजूबा – आश्चर्य-वस्तु, झील – बड़ा जलाशय, शौर्य – वीरत्व, आखिरकार – अंत में, सपूत – सुपुत्र ।

## अर्थ विस्तार :

हंसका विवेक – गुणको ग्रहण करना और दोष को छोड़ना

चार...रात – कुछ दिन सुख के फिर दुःख । यह कहावत है ।

दिल दहलना – डर जाना

कलिंग जिन – वह मूल्यवान वस्तु जो मगध से लायी गयी थी ।

आ का मा भै – ओड़िशा के बनिये समुंदर में बोहित छोड़ते वक्त यह नारा देते हैं ।

विलास सरोवर – लक्ष्मीजी के विलास का जलाशय अर्थात् चिलिका व्यापार का केन्द्र था, जहाँ धनरत्न आते थे ।

## प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) इस दुनिया को विचित्रा क्यों कहा जाएगा ?

(ख) दुनिया बदलती है, इसके क्या प्रमाण हैं ?

(ग) कलिंगाः साहसिकाः – ऐसा क्यों कहा गया है ?

- (घ) धर्माशोक ने क्या किया ?
- (ङ) वीरत्व की कहानी आगे कैसे बढ़ी ?
- (च) धउली के शिलालेख में क्या लिखा है ?
- (छ) 'उत्कल' का क्या अर्थ है ?
- (ज) ओड़िशा के मंदिर अजूबे क्यों हैं ?
- (झ) ओड़िशा के बनिये क्या करते थे ?
- (ञ) मधुसूदन ने क्या किया ?
- (ट) मधुबाबू की पुकार सुनकर क्या हुआ ?
- (ठ) ओड़िशा ने कैसे प्रगति की ?
- (ड) ओड़िशा आज पीछे नहीं है, क्या प्रमाण है ?
- (ढ) आजकल क्या-क्या नए उद्योग हो रहे हैं ?

**2. इन प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए :**

- (क) संसार निराला क्यों है ?
- (ख) संसार बदलता है, इसके क्या प्रमाण हैं ?
- (ग) आदमी के जीवन का क्या इतिहास है ?
- (घ) कलिंग की ख्याति क्यों बढ़ी ?
- (ङ) धउली के शिलालेख क्या कहते हैं ?
- (च) बक्सि जगबंधु आदि ने क्या किया ?

- (छ) कौन-सी मूर्तियाँ दुर्लभ हैं ?
- (ज) चिलिका की क्या खासियत है ?
- (झ) मधुसूदन ने क्या किया ?
- (ञ) ओड़िशावासियों ने मधुसूदन की पुकार सुनकर क्या-क्या किया ?

**3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए ।**

- (क) नीर क्षीर का विवेक किसके पास है ?
- (ख) आज सुहाना मौसम है तो कल कैसा हो जाता है ?
- (ग) आदमी के जीवन का इतिहास क्या है ?
- (घ) प्रदेश के इतिहास में क्या-क्या होता है ?
- (ङ) कलिंगवासी किसके नेतृत्व में लड़े ?
- (च) अशोक ने कौन सी नीति अपनाई ।
- (छ) खण्डगिरी की गुफाएँ किसका यशोगान करती हैं ?
- (ज) विदेशी पर्यटकों के लिए ये मंदिर कैसे हैं ?
- (झ) यहाँ के साधव (बनिये) नौकाओं में क्या भर-भर कर लौटते थे ?
- (ञ) स्वतन्त्र ओड़िशा प्रदेश कब बना ?
- (ट) देश के लिए आधुनिक रक्षा सामग्रियाँ कहाँ बनने लगीं ?
- (ठ) लोहे का उत्पादन कहाँ होने लगा ?

1. इन मुहावरों के अर्थ समझिए :

दाँत खट्टे करना

दिल दहलना

जान की बाजी लगाना

धावा बोलना

दिल भर आना

दाने दाने का मोहताज

बीड़ा उठाना

2. ऐसे शब्द बनाइए :

सिंचाई, चढ़ाई, खिंचाई, बड़ाई, कमाई

3. विलोम शब्द लिखिए :

स्थावर \_\_\_\_\_ जड़ \_\_\_\_\_ गुण \_\_\_\_\_

सर्दी \_\_\_\_\_ खुशी \_\_\_\_\_ सुख \_\_\_\_\_

अँधेरा \_\_\_\_\_ खुशहाली \_\_\_\_\_ उत्थान \_\_\_\_\_

बढ़िया \_\_\_\_\_ वीर \_\_\_\_\_ युद्ध \_\_\_\_\_

अहिंसा \_\_\_\_\_ सजीव \_\_\_\_\_ बड़ा \_\_\_\_\_

4. पर्यायवाची शब्द जानिये :

आदमी – मनुष्य, मानव	मौसम – ऋतु
प्राण – जान	पन्ना – पृष्ठ
युद्ध – लड़ाई, जंग	अमूल्य – अनमोल, बहुमूल्य
जरिये – माध्यम से	द्वीप – टापू
प्रांत – प्रदेश, राज्य	पेशा – धंधा, जीविका, काम
नाव – नौका, नैया	किस्मत – भाग्य, तकदीर

5. निम्न शब्दों के लिंग बताइए :

संसार, पहाड़, नदी, पौधा, पक्षी, विवेक, दूध, पानी, गर्मी, सर्दी, फसल, अनाज, दुःख, दर्द, सूखा, अकाल, खुशहाली, चाँदनी, खुशी, नम, अमीरी, गरीबी, जीवन, जिन्दगी, सुहाना, अँधेरी, रात, दिन, मुकाबला, पन्ना, प्राण, जान, दीपक, इतिहास, सामाज्य, आजादी, बिजली, कारखाना, शिक्षा, नाम

6. निम्न शब्दों के वचन बदलिए :

नदियाँ, झरने, पौधे, पन्ने, बड़े, मुकाबला, जान, धारा, हाथी, घोड़ा, मूर्तियाँ, सुई, वस्तु, नाव, जहाज, दाना, बहन, भाई, देशवासी, सुविधा, कंपनी, चुनौती

7. कोष्ठक में से सही क्रियापद चुनकर वाक्यों को पूरा कीजिए :

(क) कलकल करके नदियाँ ——— ।

(बह रहा है, बहती हैं, खड़ी हैं, चलती हैं)

(ख) हंस ने दूध ——— ।

(पिया, पी, पी लिये, पीएगा)

(ग) कलिंगवासियों ने जानें ——— पर जमीन नहीं ——— ।

(दी, दी, दिया, दिये)

(घ) अशोक ने युद्ध छोड़ शांति की नीति ——— ।

(अपनाया, अपनायी, अपनाये, अपनायी)

(ङ) लोगों ने प्राण ——— ।

(दिये, दिया, दी, दीं)

(च) मधुसूदन ने इतिहास ——— ।

(पढ़ा, पढ़े, पढ़ी, पढ़ीं)

(छ) अशोक ने वीरत्व की कहानी ——— ।

(सुना, सुनी, सुनीं, सुने)

(ज) पूर्वजों ने साम्राज्य ——— ।

(बनाया, बनाये)

8. पाठ में से ऐसे वाक्यांश ढूँढ निकालिए :

अच्छी शिक्षा मिली ।

इस्पात कारखाना बसा ।

प्रगति में तेजी आयी ।



9. पाठ में से कुछ क्रिया पदों को छाँटकर उनके तीनों कारणों के रूप लिखिए ।

10. पाठ में से सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं को छाँटिए ।

11. इन क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप लिखिए :

डरना, बहना, पढ़ना, बनना, करना, मानना

12. ऐसे शब्द बनाइए :

सुहावना - \_\_\_\_\_

गौरवशाली - \_\_\_\_\_

तरंगमाला - \_\_\_\_\_

जिजीविषा - \_\_\_\_\_

